रिकॉर्डः-तुम्ही हो माता..... ओम शान्तिः प्रातः क्लास 3-7-67

बच्चों नें अपने बाप की महिमा सुनी। महिमा भी एक की ही है। और कोई की महिमा गाईनहीं जा सकती। जबकि ब्र,वि,शं की कोई महिमा नही है। ब्रहमा दवारा स्थापना करवाते है। शंकर दवारा विनाश कराते है। तो महिमा फिर भी शिव बाबा की ही है। ब्रहमा वां शंकर की ****** कोई महिमा नही है। ऐसे नही कहते हो कि शंकर विनाश करते है। नही शंकर दवारा परमपितापरमात्मा विनाश कराते है। विष्णु दवारा पालना कराते है। इन लन्न को इतना लायक भी शिव बाबा है बनाते है। उनकी ही मींहिमा है।उनके सिवा फिर किनकी महिमा गाई जावे। उनको ऐसा बनाने वाला टीचर नही हो तो वो भी ऐसा नही बने।फिर महिमा है सूर्यवंशी घराने की। जो है राज्य करते है। बाप संगम पर नही आवे तो उनको राजाइ भी नही मिले। फिरहोता है रावण का राज्य। उनकी महिमा नही है। लन्न की महिमा भले गाते है सिर झुकाते है परन्तु जानते कुछ भी नही है। वास्तव मे तो महिमा कोई की भी नही है। विकारी राजाओं की महिमा तो है नही। महिमा है ही सिर्फ एक की दुसरा नही कोई। ऊंच ते ऊंच शिव बाबा ही है। शिव बाबा ही से उंच ते ऊंच पद मिलता है तो उनको फिर अच्छी तरह से याद करना चाहिये नां। अपने को राजा बनाने लिये आप ही पढ़ना है। जैसे बैरिस्टरी पढ़ते है तो अपने को बैरिस्टर बनाते है नां। तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा हमको पढाते है। जो अच्छी रीती पढेंगें वो ही ऊंच पद पावेंगें।नां पढने वाले ऊंच पद पा नही सकेंगें।पढने लिये श्रीमत मिलती है। मूल बात है पावन बनने की। जिसके लिये यह पढाई है। इस सभी मनुष्य तमोप्रधान भ्रष्ठाचारी है। पतित है। पतित दुनियां में पतित है रहते है। अच्छे वां बुरे मनुष्य तो होते ही है नां। पवित्र रहने वाले को अच्छा कहा जाता है। अच्छा पढ कर बड़ा आदमी बनते है तो महिमा होती है नां। परन्तु है तो सभी पतित। पतित ही पतित की महिमा करते है। सतयुग मे है पावन। वहां कोई किसीकी महिमा नही करते है। यहां तो पवित्र सन्यासी भी है तो अपवित्र गृहस्थी भी है। तो पवित्र की महिमा गाई जाती है।वहां तो यथा राजा रानी तथा प्रजा होते है। और कोई धर्म ही नही जिसके लिये पवित्र अपवित्र कहें। यहां तो कोई गृहस्थियों की भी महिमा गाते है। मुसलमानो के जाकर शिष्य बनते है। उनके लिये तो वो जैसे कि खुदा है। क्योंकि अल्लाह हूं2 करते रहते है। और उनको जाकरभाकी पहनते है। अल्लाह हूं2 फिर तो सभी अल्लाह हो जाते है। अल्लाह को तो पतित पावन लिबरेटर गाईड कहा जाता है। वो फिर हर एक कैसे हो सकते है। दुनियां में कितना घोर अन्धेरा है। अभी तुम बच्चे यह सब समझते हो।तुम बच्चो को अब यह ओना होना चाहिये। हमको तो पढ कर अपने को राजा बनाना है। जो अच्छी रीती पुरूषार्थ करेंगे वो ही राजतिलक पावेंगें। बच्चो को हुलास मे रहना चाहिये कि हमभी इन(लन्न)जैसे बने। इसमे मुंझने की तो दरकार है नही। पुरूषार्थ करना चाहिये। दिलशिकस्त नही होना चाहिये। यह पढाई तो ऐसी है कि छत पर बैठ कर भी पढ सकते है। विलायत मे रहे तो भी पढ सकते है।घर मे रह कर भी पढ सकते है। इतनी सहज तो यह पढाई है। मेहनत कर अपने पापों को काटना है। और दुसरों को भी समझाना है। दुसरे धर्म ववलों को भी तुम समझा सकते हो। कोई को भी यही बताना है कि तुम आत्मा हो। आत्मा का स्वधर्म एक ही है। इनमे कोई फर्क नही मिल सकता है। शरीर से ही अनेक धर्म होते है। आत्मा तो एक ही है। सभी एक ही बाप के बच्चे है। आत्माओं को बाबा ने ऐडाप्ट किया है। इसलिये तो ब्रहमा मुखवंशावली गाये जाते है। कोई को भी समझाओं की तुम्हारी आत्मा का बाप कौन है? फार्म मे भी तुम भरवाते हो उसमे भी बहुत अर्थ है। बाप तो जरूर है नां जिनको तो याद भी करते हैं। आत्मा अपने बाप को यादकरती है। आजकल तो भारत मे कोई को भी फादर कह देते है। मेयर को भी फादर कहेंगें। मनुष्य जो कुछ भी कहते है बिगर समझ के। अब तुम बचो को यह सब बाते समझाई जाती है। तुम तो फिर कोई को भी समझा सकते हो। फादर के पास जा कभी कैसे कह पता है? बच्चों को यह पता तो है कि [illegible]

है तो जनावर से भी बदतर इडियट ठहरा नां। जनावर को भी पता होता है कि यह हमारा दर है। गायें भी कही भी जोवगी तो भी बुधी मे रहेगा ही रेहगा कि हमारे बच्चे वहां है। जब जब वापस बच्चो पास आ जावेगी। कैसे भी करके आकर बच्चो को मिलेगी। याद की रग जाती है। मां कोबच्चे भी याद करते है। और मारते है। दूध पीने शोर मचाते है। जनावर मे भी इतनी अक्ल है परन्तु मनुष्य मे तो वो भी नही है। हम आत्मा को बाप कौनसा है? गाते भी है कि तुम मातपिता.... परन्तु वो कौन है, कैसे है वोकुछ भी पता नही है। भारत मे ही तुम मात पिता... कह कर बुलाते है। बाप यहां ही आकर मुखवंशा वली रचना रचते है। भारत को मदर कन्ट्री कहते है। पुकारते भी है कि मात-पिता...तो वहां जरा गाड पिता कह बुलाते है। परन्तु माता भी तो चाहिये नां जिसेस बच्चो को ऐडाप्ट करें। पुरुष भी स्त्री को ऐडाप्ट करते है फिर उनसे बच्चे पैदा करते है। रचना रची जाती है। यहां भी इनमे परमपिता परमात्मा प्रवेश कर पढाते है। ऐडाप्ट करते है। बच्चे पैदा होते है। वो है आत्माओं का बाप। फिर यहां आकर उतपति करते है। यहां तुम बच्चे बनते हो तब फादर और मदर कहा जाता है। वो तो है स्वीट होम। वहां पर तो सभी आत्मायें हो रहती है। वहां पर भी बाप बिना कोई जा नही सकते। कोई भी मिले तो बोलो की तुम स्वीट होम मे जाना चाहते हो? फिर पावन जरूर बनना पडें। अभी तो तुम भ्रष्टाचार हो। अभी तो है ही पतित आयरन ऐज्ड दुनियां। अभी तुमको तो जाना है वापस अपने घर। आयरन ऐज्ड आत्मायें तो अपने घर जा नही सकती है। आत्मायें स्वीट होम मे पवित्र ही रहती है। तो अब बाप समझाते है कि बाप की याद से ही विकर्म विनाश होगें। कोई भी देह धारी को याद नही करो। बाप को जितना याद करेंगें उतना ही पावन बनेंगें। और फिर उंच पद पावेंगें नम्बरवार। ल-न के चित्र पर जो कोई को भी समझाना बहुत सहज है। भारत मे इनका राज्य था। बाबा ने कहा था कि ल-न के चित्र मे डेट जरूर डालनी चाहिये। अब दुसरा चित्र जो बनाते है उसमे जरूर डेट जरूर डाली होगी। यह जब राज्य करते थे तो विश्व मे शान्ति थी। विश्व भर मे तो शान्ति बाप ही कर सकते है। और कोई की ताकत नही। अभी बाप हमको राज योग सिखा रहे है नई दुनियां के लिये। राजाओं का राजा कैसे बन सकते है वो आकर समझाते है। बाप ही नालेज फुल है परन्तु उसमे कौनसीनालेज है यह कोई भी नही जानते है। सृष्टी के आदि मध्य अन्त की हिस्ट्री जाग्राफी बाप ही जानते है। वो ही सुनाते है। मनुष्य तो यां कहेंगें कि सर्वव्यापी है। यां कहेंगें कि सर्व के अन्दर की जानने वाला है। फिर अपने को तो कह नां सके। यह सब बाते बाप बैठ समझाते है। अच्छी रीती धारना कर और हर्षित होना है। इन ल-न का चित्र सदैव हर्षित मुख वाला ही बनाते है। स्कूल मे उंच दर्जा पढने वाले कितने हर्षित होगें। दुसरे भी कहेंगें कि यह तो बहुत बडी परिक्षापास करते है। यह तो बहुत बडी परिक्षा है। फीस आद की कोई बात नही। सिर्फ हिम्मत की बात है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। जिसमे ही माया के विघ्न पडते है। बाप कहते है कि पवित्र बनो। बाप से प्रतिज्ञा कर फिर काला मुंह कर लेते है। बहुतजबरदस्त माया है। फेल हो जाते है जो तो फिर उनका नाम नही गाया जाता। पढाने-2 से बहुत अच्छे-2 चल रेह है बहुत महिमा गाते है। बाप कहते है अपने लिये आप ही पुरुषार्थ करके राजधानी प्राप्त करनी है। पढाई से उंच पद पाना है। यह है ही राजयोग। प्रजायोग नही है परन्तु प्रजा भी तो बनेगी नां। शक्ल और सर्विस ही से पता पड जाता है कि यह क्या बनने लायक है। स्कूलस मे स्टुडण्टस की चाल चलन से समझ जाते है कि यह फर्स्ट मे और यह थर्ड नम्बर मे आने वाला है। यहां भी ऐसे ही है। जब पिछाडी मे परिक्षा पास होगी तो तुमको सब साo हो जोवगा। साo होने मे कोई देरी नही लगती है। फिर तो लज्जा आवेगी कि ओप, हम नापास हो गये। नापास होने वाले को प्यार कौन करेगा। नम्बरवन गन्दा बनाने वाला है काम विकार। उसमे आने वाले बहुत करके फेल होकर गिर पडते है। कोई-2

पतिमेत्स भी ऐसी होती है जो जिनको की पिक्चर देखें बिना रोजाना की नीद नही आती है। पिक्चर देखने से ही अपवित्र होने का पुरूषार्थ जरूर करेंगें। यहां जो कुछ भी हो रहा है जिसमे ही मनुष्य खुश रहते है वो सब है दुःख के लिये। यह है विनाशी खुशियाँ। अविनाशी खुशी अविनाशी बाप से ही मिलती है। तुम समझ ते हो कि बाबा हमको इन जैसा(ल-न) बनाते है। वैसे तो 2 जन्मो के लिस लिखते थे। अब बाबा लिखते है 50-60 जन्म। क्योकि दवापुर मे भी पहेल तो तुम बहुत सुखधानवान रहते हो नां। भल पतित बनते हो तो भी धन बहुत रहता है। फक तो जब बिलकुल ही तमोपधान बनते है तब दुःख शुरू होता है। पहले तो सुखी रहते है। जब बहुत दुःखी होते हो तब बाप आते है। महान अजामिल जैसे पापियों का भी बाप उदार करते है। बाप कहते है कि मै सबको ले जाऊंगा मुक्ति धाम। फिर सतयुग की राजाई भी तुमको देता हूं। सबका कल्याण तो होता है नां। सबको अपने-2 ठिकाने पहुचा देता हूं। सतयुगमे सबको सुख रहता है। शान्तिःधाम मे भी सुख रहता है। कहते है कि विश्व मे शान्तिः हो। बोलो इन ल-न का जब राज्य था तो विश्व मे शान्तिः थी नां। इसको हेवन कहा जाता है नां। दुख की बात हो नही सकती है। वहां तो नां दुःख नां अशान्तिः। यहां पर तो घर-2 मे अशान्तिः है। देश-2 मे अशान्ति है। कितने टेकड़े-2 हो पडे है। कितने परेशान है। 100 माईल्स पर भाषा अलग। अब कहते है कि भारत की प्राचीन भाषा संसकृत है। अब आदी सनातन देवी देवता धर्म का ही किसको पता नही है। तो फिर यह कैसे भला कहते है कि यह प्राचीन भाषा है। तुम बता सकते हो कि आदी सनातनदेवी देवता कब था। तुम्हारे मे भी नम्बरवार है। कोई तो बहुत डल हैडिड भी होते है। देखने मे भी आता है कि यह तो कैसे कि पत्थर बुधी है। अज्ञान काल मे भी कहते है नां हे भगवान इनकी बुधी का ताला खोलो। अब बाप तुम बच्चो की बुधी को खेल रहे है। अर्थात तुमको रोशनी मिली है। फिर भी कोई-2 की बुधी खुलती नही है। कहते है बाबा आप तो हमारे बुधी वान ... बुधी हो हमारे पति की भी बुधी का ताला खोलो। बाप कहते है कि क्या मै इसी लिये आया हूं कि एकक-2 की बुधी का ताला खोलता जाऊ। फिर तो सभी महाराजा महारानी हो जावेंगें। हम भला कैसे सबका ताला खोलेंगें। उनको सतयुग मे आना ही नही होगा तो वो कैसे आवेंगें। तो फिर ताला भी कैसे खोलेंगें। ड्रामा अनुसार आपही उनकी बुधी खेलेगी मै कैसे खोलूंगा। ड्रामा पर भी तो है नां। सब फेल पास होते ही है। स्कूल मे भी नम्बरवार होते है। यह भी पढाई है। प्रजा भी बननी है। सबका ताला खोल जाव तो प्रजा कहां से आवेगी। यह तो कायदा नही है। तुम बच्चो को तो पुरूषार्थ करना है। हर एक के पुरूषार्थ से जाना जाता है। जो अच्छी रीती पढते है उनको जहां तहां बुलाते है। सेमीनार मे भी कहते है कि फलाने-2 को भेजो। फिर बाबा राय देते है कि फलाने-2 को मगवाओं। जो भला डल बुधी है वो क्या राय देंगें। 100 नामो से बाबा 10-20 नाम तो कट कर ही देते है। बाबा जानते है कि कोन-2 अच्छी सर्विस कर रहे है। बच्चो को अच्छी रीती पढना है। अच्छी रीती पढोगें तो फिर घर ले जाऊंगा और फिर स्वंग मे भेजे दूंगा। नही तो सजाये बहुत कडी है। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। स्टुडण्ट को टीचर का शो निकालाना चाहिये। सतगुरू एक ही है। बाकी कोई गुरू है नही। बाकी सभी है झूठे गुरू। सतयुग मे कोई गुरू होता नही है। अब कलयुग मे है ही सब तमोप्रधान तो कोई भी गुरू हो कैसे सकते है। अधकुच सरकार है नां। अपने को जगतगुरू कहलाना, कितना इनसल्ट है। जगत गुरू तो जगत मे प्राइमिनस्टर प्रेसीडेण्ट आद सब आ जाते है। सबका गुरू हो गया। कितनी झूठी बाते है। कोई धणी धोनी तो है नही। बाप ही सबका धणी है। वो कहते है इन साधुओं आद का भी मै ही उदार करता हूं। फिर यह भला गुरू कैसे बन सकते है। पतित को गुरू थोडेई कहा जाता है। गुरू तो एक ही होता है। सर्व का सदगति दाता एक। यह तो है ही रावण राज्य। सबकी पत्थर बुधी है। गोलडन एज मे पारस बुधी है। अभी है आयरन ऐजे तो यहां गोल्डन बुधी वाले हो कैसे सकते है। ओम